P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

वैश्विक परिदृश्य में अनुवाद की दशा व दिशा

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
म0प्र0

सारांश

वर्तमान समय में अनुवाद का महत्व और अधिक बढ़ गया है। आज भारत के लिए अनुवाद प्रथम आवश्यकता है क्यों कि अनुवाद का महत्व साहित्य, वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिक सूचनाओं के आदान प्रदान मे राजनैतिक एवं कूटनीतिक व्यवहार में अनुवाद की अनिवार्यता स्वयं सिद्ध है। आज सम्मेलन और संगोष्ठियों मे इनकी आवश्यकता को महसूस किया जाता है। सयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं में अंग्रेजी, फ्रैंच, जर्मन, रूसी, चीनी और अरबी के साथ–साथ हिन्दी स्पेनिष भाषाओं के अनुवाद की मांग बढ़ती चली जा रही है। भारत में जब से आर्थिक, वाणिज्यिक, आद्यौगिक क्षेत्र में जब से उदारीकरण और भूमंडलीकरण की प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा है तब से अनेक उद्योगपतियों ने विदेशी कम्पनियों के साथ मिलकर कई उद्योग आरंभ किये तब से विदेशी भाषाओं से अनुवाद की गतिविधियों के साथ–साथ भाषान्तरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस की गयी। जिस तरह अनुवाद की आवश्यकता आज महसूस की जा रही है उसी प्रकार दुभाषिये की मांग बढ़ रही है। अनुवाद आज एक विश्व के लिये अनिवार्य अंग बन चुका है। पूरे विश्व में बुद्धि और हृदय की भूख को सन्तुष्ट करने के लिए ज्ञान और भावानानुभूतियों के आदान प्रदान की पर्याप्त जरूरत है। यह सब बड़े स्तर पर हो भी रहा है। विश्व में किसी भी देश की भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान, विज्ञान,शास्त्र, साहित्य और कला आदि भण्डार को दूसरे देश की भाषाओं में अनूदित करके उपलब्ध कराया जा रहा है। इसी प्रकार एक ही देश के विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं में प्राप्त ज्ञान के भंडार को अन्य अनेक प्रदेश की भाषाओं में उपलब्ध करना अनुवाद के द्वारा ही सम्भव हुआ है। आधुनिक युग में जहां ज्ञान विज्ञान के नए–नए क्षेत्र खुल रहे हैं वहीं अनुवाद का महत्व दिन– प्रतिदिन बढ़ता ही चला जा रहा है जिसे वैष्विक परिदृष्य में देखा जा रहा है।

मुख्य शब्द : अनुवाद, वैश्विक परिदृश्य, महत्व, भूमंडलीकरण, भाषान्तरण, वैज्ञानिक,प्रौद्योगिकी,दार्शनिक,साहित्य, पारिभाषिक शब्दावली, वैज्ञानिक, अनुवाद साहित्य, आधुनिक लेखन, नवीनतम शोध

प्रस्तावना

आज भारत के लिए अनुवाद प्रथम आवश्यकता है क्यों कि अनुवाद का महत्व साहित्य, वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। अब विश्व एक इकाई हो गया है। ऐसी स्थिति में यह जानने की इच्छा रहती है कि किसने क्या कहा और किसने क्या लिखा है अनुवाद के द्वारा अन्य भाषाओं के साहित्य गद्य एवं पद्य अन्य देशों के विचार, अनुसंधान कार्य, राजनैतिक हलचल, सामाजिक सांस्कृतिक विचारधारणायें भी प्राप्त होती हैं। आज आवश्यकता इस बात की महसूस की जा रही है कि विश्व के सभी भाषाओं के जानकार भारत में हों जिससे जिस भाषा के अनुवाद की आवश्यकता हो वह पूरी की जा सके। अनुवाद की इस प्रक्रिया से दूर–दूर तक की सीमाओं के निवासी एक– दूसरे के निकट अनुवाद के माध्यम से आ सकें। अनुवाद की आवश्यकता इन क्षेत्रों में भी देखी जा रही है,

1. दूसरे देशों में किए जा रहे शोध कार्य
2. भारतीय तथा प्रमुख देशों के साहित्य की जानकारी
3. विधि एवं निर्णयों संबधी जानकारी
4. व्यापारिक क्षेत्र में आदान प्रदान
5. विश्व की संस्कृतियों का परिचय
6. कार्यालयी द्विभाषिकता
7. पर्यटन देश व विदेश के संबध में

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

8. विश्व की श्रेष्ठ कृतियों का ज्ञान
9. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन
10. सामान्य ज्ञान
11. पत्रकारिता के क्षेत्र में
12. विश्व के विविध देशों में परस्पर वैचारिक स्तर पर आदान– प्रदान।

इस प्रकार विश्व के इस आदान– प्रदान में ज्ञान के कुछ लेने व देने की प्रक्रिया में अनुवाद अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहा है। वर्तमान युग में अनुवाद का महत्व और उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नही है, वह सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और राष्ट्रीय एकता का माध्यम भी है। जो सारी भाषाएं, सीमाएं, पार करके आधुनिक युग में जहां– जहां ज्ञान – विज्ञान के नए – नए क्षेत्र खुल रहे हैं वहां देश– विदेश में भी जोड़ने का कार्य करता है।[1] आज के वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी, विकास के युग में केवल भाषा ही नही देश की सीमा रेखा भी अस्पष्ट होती जा रही हैं। आज व्यक्ति एक भाषा क्षेत्र तक सीमित नही रहा उसे अन्य भाषा क्षेत्र के सम्पर्क में आना उसकी आवष्यकता है। यह आवष्यकता ही उसे अन्य देश की भाषाओं को सीखने समझने के लिए प्रेरित कर रही है। आज का युग अनुवाद का युग है, एक दूसरे के साहित्य, विज्ञान, कला को जानने समझने की आवश्यकता ने ही अनुवाद की ओर हम सभी को प्रेंरत किया है।[2]अनुवाद साहित्य के उभरते परिदृश्य में आज अनुवाद का साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इससे ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, प्रौद्यौगिकी, तकनीकी आदि सभी की जानकारी प्राप्त हो जाती है। अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की प्रक्रियाओं से गुजरते हुए शब्दानुवाद, सहजानुवाद, भावानुवाद, रूपान्तरण, भाषान्तरण आदि का अुनवाद के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद ने आज हिन्दी के, मराठी के, अंग्रेजी के, उर्दू के, अन्य सभी भारतीय प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य का तेलगू, बंगला, गुजराती, कन्नड़, मलयायम, आदि सभी भाषाओं की संस्कृतियों की जानकारी के साथ– साथ विदेशी भाषाओं की संस्कृति से भी परिचय करवाया है। अनुवाद वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में आवश्यक ही नही अनिवार्य हो गया है।[3] ज्ञान के क्षेत्र में ये मानव समाज अनुवाद के कारण देश – विदेश के रीति रिवाज , साहित्य व अन्य गतिविधियों से जुड़ गया है। यह अनुवाद की सबसे बड़ी उपलब्धि है। मैक्समूलर का यह कथन है कि मनुष्य जब किसी वस्तु विशेष को देखकर ठहर जाता है और सोचने लगता है यह क्या है कैसे और क्यूं है, तभी उसके भीतर दार्शनिक का उदय हो जाता है। अर्थात मनुष्य जो प्रथम स्तर पर आंखों से देखी बात पर जिज्ञासु बन जाता है और अपनी जिज्ञासा को जब वो अभिव्यक्त करता है तब दार्शनिक साहित्य का जन्म होता है। विश्व में आज जितने भी विषयों से संबधित साहित्य का निर्माण हुआ उस निर्माण के मूल में कहीं न कहीं दार्शनिक साहित्य मूलाधार है। अनुवादित साहित्य हमें कहीं न कहीं एक दूसरे के करीब लाता है।[4] विश्वभर मे आज जितना भी और जिस भाषा में धार्मिक साहित्य लिखा गया वह साहित्य सर्वगुण सम्पन्न साहित्य के रूप में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है। बायबल, कुराण, रामायण, ये धार्मिक रचनाये जहां एक ओर धार्मिक ज्ञान प्रदान करती हैं वहीं दूसरी ओर एक विशिष्ट व्यवहारिकता से भी परिचित करवाती हैं। इन मानवता का संदेश देने वाले धार्मिक ग्रन्थों का विश्वभर में अनुवाद हो चुका है। अनुवाद के कारण ही आज सम्पूर्ण विश्व में भारत के धार्मिक व अन्य महत्वपूर्ण साहित्यक ग्रन्थों से लोग परिचित हो पा रहे हैं। इस प्रकार वैश्विक साहित्य को एकता के सूत्र में बांधने का अगर किसी ने कार्य किया है तो वह अनुवाद है। आज नव सृजनता के साथ – साथ वैश्विक विचारों की आवश्यकता महसूस की जाती है जिसका बखूबी कार्य अनुवादित साहित्य कर रहा है। आज के वैश्विक परिदृश्य में अनुवाद ने मानव को विश्व से जोड़ दिया है।[5] साहित्य के सभी क्षेत्र में आज बड़े पैमाने पर अनुवाद हो रहे हैं।केवल पाश्चात्य ही नही तो संस्कृत, पाली, लैटिन, मूल भाषाओं के ग्रंथों का भी अनुवाद हुआ है, और हो रहे हैं। विश्व की अनेक सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों के विचार अनुवाद के कारण ही जान पाना संभव हुआ है। वर्तमान समय की मांग के अनुसार आज अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता है।

उद्देश्य व महत्व

देखा जाए तो छोटे बड़े ब्यौरे के साथ दृश्यों को बुनने और स्त्रोत पुस्तक के सभी चरित्रों को सजीव और संवादों को विश्वसनीय बनाने में जो अनुवाद सक्षम समर्थ होता है, वही श्रेष्ठ माना जाता है। भाषिक कौशल, कथ्य की परिपक्त प्रस्तुति, उपयोगी संदर्भ,तथा तत्संबधी कृति की प्रयोग शीलता तथा प्रयोजन शीलता को जो अनुवाद सुन्दर तस्वीर, तलस्पर्शी सपर्श के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करे वही कालजयी व असरकारक होता है, जो अनुवाद अनूदित कृति में उठाए जरूरी सवालों, घटनाओं, व्याख्याओं,अंतरंग चित्रों को उनकी मूल आत्मा के साथ परत दर परत उघाड़े, वही अनुवाद प्रामाणिक व सफल कहलायेगा। अनुवाद कर्म बहुत कठिन प्रक्रिया है। इसमें जिस कृति का अनुवाद करना है, उसके शिल्प की मजबूत पकड़, भाषा में गहरी पैठ, तथा उसके टोटल स्ट्रक्चर, पर नियंत्रण आवश्यक है, तभी अनुवाद अपने मूल शक्ल दूसरी भाषा में जन्म ले सकता है क्योंकि अनुवाद कर्म दोहरी प्रक्रिया माना जाता है। यदि अनुवादक अनुभवहीन और जागरूक नही है तो उसका अनुवाद साहित्य के क्षेत्र में सफल नही कहलायेगा।[6] साहित्यिक अनुवाद की तरह वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन अनुसंधान निरंतर चल रहा है। हर देश वैज्ञानिक चिंतन तथा अनुसंधान से लाभान्वित होने का प्रयास करते है। विभिन्न देश अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपनी देशी प्रमुख भाषाओं में वैज्ञानिक तकनीकी भाषाओं का अनुवाद कराते हैं। कुछ वैज्ञानिक स्वयं अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अपनी देशी भाषा का भी ज्ञान अच्छा रखते हैं। देखा जाए तो भारत में वैज्ञानिक चिंतन की परम्परा प्राचीन रही

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

है, पर आधुनिक लेखन की परम्परा के लिए प्रेरणा पाश्चात्य वैज्ञानिक साहित्य ही रहा है। भारत में विज्ञान तथा तकनीकी लेखन की आधुनिक परम्परा में कुछ वैज्ञानिक अंग्रेजी के माध्यम से ही करते रहे हैं। आधुनिक विज्ञान तथा तकनीकी विषयों से संबधित अनुसंधानात्मक लेख प्रकाशित करवाने वाली पत्रिका एशियाटिक रिसर्चेज है। श्री जगदीश चन्द्र बसु का भैतिकी में प्रथम शोध पत्र इसी पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। इंडियन जर्नल आफ फिजिक्स में श्री सी. बी. रमन का प्रसिद्ध शोध पत्र प्रकाश के विकिरण प्रकाशित हुआ था। उन्हें बाद में नोबेल पुरस्कार सन् 1939 में प्राप्त हुआ। सन् 1988 –89 में प्रोफेसर टी के गजर के दिशा निर्देश में पांच वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित हुयीं। सन् 1909 में महेश चरण सिंह की रसाायनशास्त्र नाम की पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित हुयी। बंग साहित्य परिषद कलकत्ता नें बंगाल व वाराणसी में नागरी प्रचारणी सभा ने हिन्दी में विज्ञान तथा तकनीकी विषयों की कुछ पुस्तकें और शब्द संग्रह प्रकाशित किये। सन् 1906 में हिन्दी वैज्ञानिक कोष प्रकाशित कर वैज्ञानिक लेखन में आने वाली पारिभाषिक शब्दावली की समस्याओं को हल करने का प्रयास किया गया। कोष निर्माण प्रयासों में हरिराय शर्मा का कृतिकोष 1910 में ब्रजबल्लभ मिश्र का पदार्थ संख्या कोष 1918 में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार वर्तमान समय के वैज्ञानिक परिदृश्य में देखा जाए तो सूचना प्रौद्यौगिकी ने ज्ञान विज्ञान के साहित्य ने प्रचार–प्रसार को नये आयाम प्रदान किए हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद एक प्रधान अंग बन गया है। विश्व के सभी विकसित देशों की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, तथा औद्यौगिक प्रगति में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विज्ञान के तेजी से बदलते हुए विश्व में प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कृषि आदि क्षेत्रों में हो रहे अविष्कारों और अनुसंधानों से जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है। आज के वर्तमान परिदृष्य में विश्व की कम होती दूरियों में अनुवाद का महत्व व उपयोगिता पहले से और भी अधिक हो गयी है। कविता , कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं के अतिरिक्त ज्ञान – विज्ञान की अन्य विधाओं व नवीनतम तकनीकी नवीनतम शोध और साहित्य के अनुवाद की दिशा में कार्य करने की असीमित संभावनाएं अभी भी देश में हैं। सूचना संचार क्रांति के इस दौर में ज्ञान की और सूचनाओं की अपरिमित उपलब्धता के बीच मल्टी डिसिप्लिनरी स्टडी का पक्ष तेजी से उभरा है। ऐसी स्थिति में उत्कृष्ट अनुवाद रचने के लिए अनुवादकों का नवीनतम ज्ञान से युक्त होना अनिवार्य हो गया है। इंटरनेट पर उपलब्ध विविध संसाधनों के उपयोग द्वारा हिंदीतर साहित्यानुवाद में नवोदित असीमित संभावनाओं को मूर्त रूप दिया जा सकता है। साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य, जनसंचार और तकनीकी आदि के हिन्दी अनुवाद के लिए योग्यता और दक्षता भी भिन्न होती है। इनके लिए वांक्षित ईमानदारी, निष्ठा, धैर्य, और समर्पण के अतिरिक्त ज्ञान, विज्ञान की प्रत्येक धारा में अनुवाद के लिए अलग–अलग जटिलताएं और चुनौतियां हैं।कविता , नाटक, कहानी, उपन्यास आदि रचनाओं के भीतर दो भाषाओं की टकराहट, अनुवाद विशेष का व्यक्तित्व, उसकी संवेदना और भाषायी समझ, मूल रचना का सौन्दर्यपरक विशिष्ट तथा उनका सर्जनात्मक रूपांतरण अपनी विशिष्ट अलग–अलग भूमिका निभाते हैं। इससे रचना अपनी विषयवस्तु से अलग होकर एक काव्यवस्तु बन जाती है। इसलिए साहित्यिक अनुवाद अत्यंत दुष्कर कर व जटिल कार्य है। इस कार्य के लिए असाधारण प्रतिभा, क्षमता, और अभ्यास,तीनों की अपेक्षा रहती है, इस प्रकार देखा जाए तो साहित्यिक अनुवाद जटिल प्रक्रिया के लंबे सफर से गुजरता हुआ पाठकों के पास पहुंचता है। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादकों का अभाव भी एक जटिल समस्या है। वैज्ञानिक अनुवाद से ये अपेक्षा रहती है कि यह भाषाविद के साथ–साथ विषयविद भी हो।वैज्ञानिक विषय के जानकार अंग्रेजी में अधिक हैं तो हिन्दी में अत्यंत अल्प।विज्ञान साहित्य के हिंदी अनुवाद के लिए सबसे बड़ी चुनौती तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली के अभाव की है। यद्यपि भारत सरकार ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली आयोग ने इस दिशा में सकारात्मक कार्य किया है। अंग्रेजी और विष्व की अन्य भाषाओं में विज्ञान लेखन की प्रगति अत्यंत तीव्रगति से हो रही है। नए–नए अविष्कार और नवीनतम ज्ञान को अनुवाद के माध्यम से हिन्दी में उपलब्ध करवाने के लिए तेज, समर्पित व योग्य युवकों की कमी महसूस की जा रही है। इसके साथ ही नए लोंगों द्वारा इस क्षेत्र में किए गए कार्यो को प्रोत्साहित करने, उन्हे मंच प्रदान करने और आगे बढ़ने के लिए संसाधन उपलब्ध करवाने की सबसे बड़ी कमी भी है, जो इस दिशा की प्रगति मे बाधक है, इसे दूर किया जाना आवश्यक है।[7]

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि अनुवाद सिर्फ ज्ञान पर निर्भर नही करता वह एक कलात्मक कार्य है अनुवाद कार्य चुनौतिपूर्ण है क्यौंकि अनुवाद कते समय अनेक मुश्किलों का सामना अनुवादक को करना पड़ता है। अनुवादक को ईमानदारी से कार्य करते समय अपने व्यक्तित्व की झलक को प्रकट नही करना चाहिए। मूल रचना हे सौंदर्य ,तत्वों, भावों, विचारों और उद्देश्य को अभिव्यक्त करना अनुवादक के लिए साहसपूर्ण कार्य है जिसमें उसे अनेक समस्याओं को हल करना पड़ता है। अनुवाद का महत्व पर्यटन क्षेत्र, व्यापार, उद्योग, साहित्य,चिकित्सा, संस्कृति, मनोरंजन शोध तथा ज्ञान के क्षेत्र में है। अनुवाद साहित्य के उभरते परिदृश्य में अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में आज अनुवाद की अनिवार्यता हर क्षेत्र में पथ – पथ पर दुष्टिगोचर हो रही है। वर्तमान समय में अनुवाद का महत्व दिन– प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि विभिन्न संपर्क माध्यमों के द्वारा एक देश दूसरे देश की भाषाओं के माध्यम से निकट आता जा रहा है, इसमें अनुवाद की भूमिका अत्यंत

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

महत्वपूर्ण है। आज के सूचना और संचार माध्यमों में भी अनुवाद और भाषान्तरण की सबसे अधिक मांग है।अनुवाद सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक जरूरत के साथ कार्यालयीन कामकाज की अत्यावश्यक शर्त भी बन गया है।भाषाविज्ञान संबधी कुछ नये सिद्धान्त और अर्थ निरूपण की युक्तियों पर महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। अनुवाद में मूल्यांकनपरक कार्य करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसमे मूल्यांकन विधियों का अभाव देखा जा रहा है। अभी तक अनुवाद का मूल्यांकन शब्दपरक है। सुझााव है कि संस्कृत को आधार मानकर शब्द संहिता का निर्माण किया जाये। व्याकरणिक समानताओं का पता लगाने से अनुवाद प्रणाली की कार्य क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसीलिये भारतीय भाषाओं के मूल व्याकरण की संकल्पना की गई है।अनुवाद आज मनुष्य जीवन की प्रथम आवश्यकता बन चुका है आवश्यकता है उसे सही तरीके से अनुवादक द्वारा अनुवाद करने की और इसके लिये उसे विश्व की समस्त भाषाओं को जानना ही होगा।[8]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. गायत्री हीरामन बोस–राष्ट्रभाषा हिन्दी, अनुवाद समस्या,साहित्य सुरभि, शाहदरा दिल्ली सन् 2009, पृष्ठ, 114, 227
2. अनुवाद चिंतन और सैद्धांतिक आयाम– डॉ. गार्गी गुप्त, डॉ. ओमप्रकाश सिंहल, पृष्ठ, 81,84
3. डॉ. अनुवाद क्या है, सम्पादक, डॉ. राजकमल बोरा, पृष्ठ, 86,143
4. डॉ. अनुवाद, अवधारणा और आयाम–सत्यदेव मिश्र, रामाश्रय सविता, पृष्ठ, 32,36
5. अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग–डॉ.आदिनाथ सोनटक्के, चंन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर।पृष्ठ, 32
6. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, गोस्वामी एवं कृष्ण कुमार, सन 2008, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 32
7. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग–प्रो0 सुदेश,नई दिल्ली पृष्ठ –66
8. स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष